चोल स्थानीय प्रशासन:-

"स्थानीय सरकार को स्थानीय रूप से एक गांव के प्रशासन के रूप में समझा जाता है-एक गाँव, एक कस्बा, एक शहर या राज्य से छोटा कोई अन्य क्षेत्र, जो स्थानीय निवासियों का प्रतिनिधित्व करने वाले निकाय द्वारा, एक बड़ी मात्रा में स्वायत्तता रखता है, कम से कम बढ़ाकर सेवाओं पर इसकी आय का एक हिस्सा जो स्थानीय और इसलिए, राज्य और केंद्रीय सेवाओं से अलग माना जाता है। "

चोल प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जिलों, कस्बों और गांवों के स्तर पर स्थानीय प्रशासन था। उत्तरमेरुर शिलालेख चोल प्रशासन के बारे में बहुत कुछ कहता है। ग्राम स्वायत्तता चोल प्रशासनिक प्रणाली की सबसे अनूठी विशेषता थी।

नाडु:-

चोलों की महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाइयों में से एक तमिलनाडु था। नादुस की प्रतिनिधि सभाएँ थीं। नाडुओं के प्रमुखों को नट्टर्स कहा जाता था। नाडू की परिषद को नट्टवई कहा जाता था। नटवाइस और नट्टर्स के प्रतिनिधियों ने कृषि को बढ़ावा दिया। उन्होंने लोगों की सुरक्षा और कर संग्रह पर भी ध्यान दिया।

ग्राम प्रशासन:-

ग्राम प्रशासन की संपूर्ण जिम्मेदारी ग्राम सभा नामक ग्राम सभा के हाथों में थी। चोल प्रशासन की सबसे निचली इकाई ग्राम इकाई थी। गाँव की सभाएँ शांति, टैंकों, सड़कों, सार्वजनिक तालाबों के राजस्व संग्रह, न्यायपालिका, शिक्षा और मंदिरों के रखरखाव का काम देखती थीं। गाँवों से लेकर राजकोष तक करों के भुगतान में गाँव की सभाएँ शामिल थीं। उन्होंने सार्वजनिक बाजारों को विनियमित किया और लोगों को फथाइन और बाढ़ के समय मदद की। असेंबली शिक्षा के लिए प्रावधान प्रदान करती है। गाँव की सभाएँ गाँवों के मामलों पर पूर्ण अधिकार रखती थीं। उन्होंने प्रत्येक गाँव में कानून व्यवस्था बनाए रखी। ब्राह्मण बस्ती को चतुर्वेदी मंगलम कहा जाता था।

वरियम्स:-

ग्राम सभाओं ने ग्राम प्रशासन को प्रभावी रूप से वेरियम्स की मदद से चलाया। समाज के पुरुष सदस्य इन वरियामों के सदस्य थे। इन वेरियम्स की संरचना, योग्यता और सदस्यता की अवधि गांव से गांव में भिन्न होती है। हर गाँव में कई वेरियम्स थे। नियया वेरियम ने न्याय किया, थोटावरीयम ने फूलों के बागों की देखभाल की। धर्म वरियाम ने दान और मंदिरों की देखभाल की। एवरियायम टैंक और जल आपूर्ति के प्रभारी थे। पोंन वेरियम वित्त के प्रभारी थे। ग्रामकरिया वेरियम सभी समितियों के कामों को देखता था। इन वैरिवम के सदस्यों को "वारिवपेरुमक्कल" के रूप में जाना जाता था, उन्होंने मानद सेवा प्रदान की। गाँव के अधिकारियों को वेतन का भुगतान या तो नकद या तरह से किया जाता था। इन चरों की अच्छी कार्यप्रणाली ने चोलों के स्थानीय प्रशासन की दक्षता में वृद्धि की।

शाही अवधि (850 - 1200 ई) के दौरान चोल सरकार को इसकी विशिष्टता और नवीनता के लिए चिह्नित किया गया था। चोल पहले राजवंश थे जिन्होंने पूरे दक्षिण भारत को एक समान शासन के तहत लाने की कोशिश की और काफी हद तक अपने प्रयासों में सफल रहे। यद्यपि उस सरकार के फॉर्म और प्रोटोकॉल की तुलना सरकार के समकालीन रूप से नहीं की जा सकती है, चोल साम्राज्य का इतिहास उनके इतिहास में एक खुशहाल युग का है और सरकार और लोगों द्वारा महान चीजें हासिल की गईं।